Baba’s Praise

29/7/2015

- बाप तो ज्ञान का सागर है। भक्ति को भी जानते हैं।
- ब्रह्माण्ड का मालिक शिवबाबा भी है, तुम भी हो। सूक्ष्मवतन की तो बात ही नहीं।
- बाप कहते हैं तुम माताओं को कितना ऊंच बनाता हूँ।
- विश्व में शान्ति वह तो भगवान ही कर सकता है। शिवबाबा आते हैं जरूर कुछ सौगात लाते होंगे।
- सतयुग में यह विश्व के मालिक कैसे बने हैं - यह भी अभी तुम जानते हो।
- मनुष्य तो बिल्कुल घोर अन्धियारे में हैं। अभी तुम घोर रोशनी में हो। बाप आकर रात को दिन बना देते हैं।

- बाप द्वारा सृष्टि चक्र की हिस्ट्री-जॉग्राफी को तुम जानकर चक्रवर्ती राजा बन रहे हो। बाबा कितना प्यार और रूचि से पढ़ाते हैं तो इतना पढ़ना चाहिए ना।
- सेकण्ड में जीवनमुक्ति भी गाया हुआ है। और फिर यह भी गायन है कि ज्ञान का सागर है। सारा सागर स्याही बनाओ, जंगल को कलम बनाओ, धरती को कागज़ बनाओ.... तो भी अन्त नहीं आ सकती। शुरू से लेकर तुम कितना लिखते आये हो। ढेर कागज हो जाएं।
- बाप भी आकर बूढ़े तन से सर्विस कर रहे हैं ना। बाप करनकरावनहार है।